बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

वर्ष – 01, अंक-05
मूल्य 10/-

विशेषांक
समय का महत्व

अक्टूबर 2015

मेरे प्यारे दोस्तो,

समय ही धन है, जिसका दुरूपयोग करना पछतावे से कम नहीं है।

"का बरखा जब कृषि सुखाने, समय चूक पुनि का पछतावे। "यह तब ही सम्भव है, जब हम समय के महत्त्व को पहचान लें। समय के महत्त्व को पहचानने का सबसे आसान तरीका है कि हम अपने समय का ज्यादा–से–ज्यादा इस्तेमाल करें, अच्छे कामों के लिए। आपका खोया हुआ पैसा, मोबाइल या और कुछ लौट आएगा। पर समय यदि एक बार बीत गया तो वह दुबारा आपके पास लौट कर कभी नहीं आएगा। हम सभी जानते हैं, जिसने समय का उपयोग किया। वह सफलता की ऊँचाइयों को चूम रहा है। महात्मा गाँधी, अरस्तू, रामानुजम, मैडम क्यूरी की बातें पूरी दुनिया करती है। जिन्होंने समय का उपयोग किया और एक ऊँचाई हासिल की ।

एक लोकोक्ति मुझे याद आ रही कि "समय का चूका विद्यार्थी, बरसात का चूका किसान और डाल का चूका बन्दर कहीं का नहीं रहता।" इस लोकोक्ति का सीधा मतलब यही है दोस्तों, कि अगर आप समय का सम्मान नहीं करेंगे तो समय भी आपका सम्मान नहीं करेगा। हम समय को नष्ट करेंगे तो समय भी हमें छोड़ने वाला नहीं।

जो लोग समस्याओं का हल, आलस्य को तोड़कर, तेजी से छलाँग लगाते हुए समय की गाड़ी पर बैठ जाते हैं। समय फिर उन्हें सफलता के जंक्शन पर ही उतारता है। प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा ने लिखा है–

"तू मोती के द्वीप स्वपन में रहा खोजता,
तब तो बहता समय शिला–सा जम जाएगा।"

गुजरते हुए समय में कल्पना की दुनिया में जीने वालों के पास अक्सर पछतावे के सिवा कुछ नहीं होता। हर मनुष्य जो सफलता प्राप्त करना चाहता है। वह अपने हर दिन की दिनचर्या को प्रबल बनाता है, और अपना सारा काम एकाग्र मन से करता है। तब जाकर वह सफलता को प्राप्त होता है।

प्यारे दोस्तो! एक बार अगर समय बीत गया। तो इस दुनिया की ऐसी कोई भी ताकत नहीं है, जो इसे पुनः लौटा सके।

इसलिए तो कहा गया है–

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होयगो, बहुरी करैगा कब?"

तो दोस्तो! आप भी अपना हर काम समय से करेंगे न...?

पवन राज
(किलकारी लाल)

"माँझी : द माउंटेन मैन" फिल्म में किलकारी के बच्चे

'माँझी :द माउंटेन मैन फिल्म में बिहार बाल भवन किलकारी नाटक विधा के पाँच बच्चों ने अभिनय किया है।

केतन मेहता निर्देशित फिल्म के सहायक निर्देशक वरदराज सहनी ने दशरथ माँझी पर शोध के दौरान बाल भवन किलकारी की नाट्य विधा के बच्चों का ऑडिशन किया। बच्चों की उत्कृष्ट प्रस्तुति देखकर किलकारी के पाँच बच्चों को फिल्म में अभिनय के लिए चयनित किया गया। इन बच्चों में हेमा कुमारी (फगुनिया), राहुल कुमार (दशरथ माँझी), चाँदनी कुमारी (दशरथ माँझी की पुत्री), सुलेखा रानी (राजकुमरिया, माँझी की बेटी), पूजा कुमारी (माँझी की बहू) हैं । इन बाल कलाकारों ने दशरथ माँझी के परिवार में शामिल होकर फिल्म में जान फूँक डाली है।

'गूंजा' फिल्म एवं 'बलचनमा' सीरियल में भी किलकारी के बच्चे अभिनय किये है।

विशेष कविता

जो बीत गयी सो बात गयी

जीवन में एक सितारा था,
माना वह बेहद प्यारा था
वह डूब गया तो डूब गया,
अंबर के आँगन को देखो
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गये फिर कहाँ मिले,
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है,
जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया,
मधुबन की छाती को देखो
सूखी कितनी इसकी कलियाँ,
मुरझाई कितनी इसकी वल्लरियाँ
जो मुरझाई फिर कहाँ खिली,
पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुबन शोर मचाता,
जो बीत गयी सो बात गयी।

–हरिवंश राय बच्चन

माथापच्ची

एक मुर्गी और एक बच्ची के साथ एक बाबाजी कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक आदमी मिला। उसने उनसे तीन सवाल पूछे–

1. बाबाजी आपकी उम्र कितनी है?
2. इस बच्ची से क्या रिश्ता है?
3. इस मुर्गी की कीमत कितनी है?

इन सब का उत्तर एक हीं है जवाब सोचों?

चुप्पी टुट गई

चिलचिलाती धूप! पक्षी किलोल मचाते। किसी पेड़ पर कोयल तो कहीं तोता और मैना। रंग–बिरंगे फूलों और हरी–भरी प्रकृति के बीच बैठा है अपना रीहू। ऊपर में बिल्कुल शांत पर उसके मन में बादलों की तरह कई सवाल हरदम उमड़–धुमड़ करते रहते। दिल में तो बहुत कुछ भरा है पर कहे किससे? कोई उसकी सुनता ही नहीं। सब उसे धिक्कारते और बस अपनी ही सुनाकर चले जाते। यहाँ तक कि उसके माँ–बाबा ने भी उसकी एक न सुनी। वह तो चीखता, चिल्लाता रहा पर माँ–बाबा उसे छोड़कर चले ही गए इस दुनिया से परे, वहाँ–जहाँ एक न एक दिन सभी को जाना ही है। रीहू तो अब अंकल–आंटी के साथ रहता। आंटी तो पहले ही उसे पसंद नहीं करती थी, पर सड़क–दुर्घटना में वह विकलांग हो गया, तब से तो सारे दोस्तों ने भी मुँह फेर लिया। अब बस अंकल ही उसकी चिंता करते थे। दूजा कोई भाई–बहन भी नहीं। आंटी तो यही सोचती कि ना जाने कौन–सी मनहूस घड़ी थी, जब फुटपाथ से उठाकर अंकल रीहू को घर ले आए। दस साल से साथ रहता। पर आंटी ने उसे माँ कहने का हक भी छिन लिया। फिलहाल जो भी हो, रीहू आंटी के संग इतना उलझा कुछ समझ ही नहीं आता। वह कुछ सवालों में बार–बार फँस रहा था। आंटी 'झल्लाई' एक ''बार में तुझे कुछ समझ में नहीं आता क्या?अक्ल क्या भैंस चराने गई है?''

तभी पड़ोस वाली आंटी ने टाँग अड़ा दी, ''आंटी! आप इसे पढ़ाने में बेकार ही वक्त बर्बाद कर रही हैं। इसे कुछ समझ में नहीं आने वाला, यह तो स्कूल का भी फेलुवर है, लंगड़ा कहीं का। कड़वे शब्द सुनकर रीहू को बहुत बुरा लगा, लेकिन वह खुद के लिए कुछ कर न सका। आंटी खीझ में वहाँ से उठकर चली गई। दिन गुजर चुका था। रात हो गई थी। वह बिस्तर पर लेटा था। शायद उदास मन से कुछ सोच रहा था। क्यूँ सब मुझे नीचा मानते हैं?क्या मुझे दोस्ती, प्यार और स्नेह का अधिकार नहीं?क्या मैं इन सबके जैसा नहीं हूँ क्या मेरी विकलांगता मेरे लिए श्राप है ? नहीं मैं ऐसा नहीं सोच सकता। क्या हुआ जो सब मुझे नीचा मानते हैं, मैं उन्हें खुद की प्रतिभा दिखाऊँगा। जिस दिन मेरी वे मेरी प्रतिभा मेरा यह आत्मविश्वास देखेंगे तो उनके चेहरे पर ताले लटक जायेंगे, अगले दिन सूर्य की पहली किरण उसके लिए नई रौशनी लेकर आई थी। वह स्कूल जाने के लिए बाहर निकल रहा था। तभी उसने देखा पड़ोस वाला बन्टी अपनी माँ से स्कूल न जाने की जिद कर रहा। रीहू अपने चेहरे पर नई चमक लिए हुए बोल पड़ा आंटी! आप बेकार ही इसके पीछे अपना वक्त बर्बाद कर रही हैं। यह नहीं समझने वाला। यह तो पढ़ने से डरता है। वैसे बन्टी तू भी खुद से स्कूल जाने की आदत डाल ले। क्योंकि वक्त का कोई भरोसा नहीं कैसे बदलता है पता नहीं चलता।'' इतना कहकर रीहू आगे बढ़ गया। आज से वह हर इंसान जो उसपर ऊँगली उठाने वाला हो उसे जवाब देने के लिए तैयार हो चुका था। पहले तो उसे लगता था कि जो कुछ भी उसके जीवन में हुआ। वह बहुत बुरा हुआ। पर अब वो समय के बदलने का महत्त्व समझ चुका था। परिवर्त्तन ही संसार का नियम है, और जो होता है अच्छे के लिए होता है। अब देखो माँ–बाबा के जाने से उसकी जिन्दगी बदली, और अब आत्मविश्वास आने के बाद उसके जीने का सलीका ही बदल गया। समय फिर एक बार भविष्य में होने वाले देश की हस्ती के लिए बदल चुका था, क्योंकि अपने रीहू की चुप्पी छूट गई थी।

प्रियंतरा भारती

बुझो–बूझौवल

- भिखारी नहीं, पर पैसे माँगता है। लड़का नहीं, पर पर्स इस्तेमाल करता है। पुजारी नहीं, पर घंटी बजाता है।
- बेशक न हो हाथ में हाथ, पर जीता है वह सबके साथ।
- दो किसान लड़ते जाएँ, उनकी खेती बढ़ती जाए।
- तीन अक्षर का उसका नाम, आता है जो खाने के काम। अंत कटे तो 'हल' बन जाए। मध्य कटे तो 'हवा' बन जाए।

मोहित कुमार

समय का मोल

बड़ों से लेकर आशीष,
आगे बढ़ते जाना है,
समझ समय का मोल,
सीखना और सिखाना है।

टूटा हुआ घड़ा कभी,
वह जुड़ नहीं पाता है।
गँवा दिया समय जिसने,
घड़े–सा टूट जाता है।

बीता हुआ समय भला,
क्या वापस लौट आता है?
जो करता समय बर्बाद,
वह मल–मल हाथ पछताता है।

तुलसी लवली
वर्ग–XIth

समय का बड़ा मोल है

समय मूल्यवान है,
समय बलवान है
समय अनमोल है,
समय का बड़ा मोल है,
क्योंकि पूरी दुनिया गोल है।

समय कभी रूकता नहीं है,
समय कभी झुकता नहीं है।
समय कभी पूछता नहीं है,
क्योंकि समय का बड़ा मोल है,
तभी तो दुनिया गोल है।

समय पर ही टिकी जिन्दगी है,
समय पर ही मिलती हर खुशी है।
समय से ही होता हर काम है,
तभी तो समय का बड़ा मोल है,
क्योंकि पूरी दुनिया गोल है।

समय जो जाता है,
वापस फिर नहीं आता है।
समय नहीं अब गँवाना है,
क्योंकि दुनिया गोल है,
समय का बड़ा मोल है।

मुनदुन राज

खेल

खेल – "पर्व–त्योहार"

दोस्तो, हम फिर आ गये आपके साथ खेलने के लिए। आज हम खेलेंगे खेल पर्व–त्योहार । इसके लिए हमें बहुत सारे दोस्त इकट्ठे करने होंगे। अब हम एक गोले में बैठ जाएँ, खेल खेलाने वाला हममें से एक दोस्त उठकर अपनी पसंद के त्योहार का नाम बोलकर उसके बारे में एक वाक्य कहेगा। इसी तरह सब बोलते जायेंगे, जब तक कि उस त्योहार के बारे में सारी बातें न आ जाएँ। हम त्योहार के बारे में कुछ भी बता सकते हैं। जैसे–उस दिन क्या खाते हैं, क्या बनाते हैं, क्या पहनते हैं, कैसे मनाते हैं, पड़ोसी क्या करते हैं, हम खुद क्या करते हैं, वह त्योहार हमें कैसा लगता है, उसके पीछे कौन–सी पौराणिक कथाएँ है? इत्यादि। जब ये सारी बातें आ जाएँगी तो यह खेल खत्म हो जाएगा।

तो कहिए, मजा आया न! तो अगली बार मिलते हैं दूसरे खेल के साथ।

–सुधीर

खोजबीन

दिल का दौरा क्यों पड़ता है

हम अक्सर सुनते हैं। कि अमुक व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई। कभी–कभी तो दिल का दौरा इतना भयानक होता है कि मनुष्य की पल–भर में ही मृत्यु हो जाती है। जानते हो, ऐसा क्यों होता है?

दिल हमारे शरीर का महत्त्वपूर्ण अंग है। यह एक ऐसी मांसपेशी है, जो एक पंप का काम करती है। हमारे दिल का आकार मुट्ठी के बराबर होता है। यह छाती के बायीं ओर दोनों फेंफड़ों के बीच में स्थित है। यह निरंतर सिकुड़ता और फैलता रहता है। दिल के दौरे का अर्थ है कि रक्त की कमी के कारण इससे किसी हिस्से का विनाश हो जाना। दिल में रक्त की कमी से दर्द होने लगता है। यह दर्द असहनीय होता है। बाया हाथ सुन्न होने लगता है। साँस लेने में कठिनाई होती है। नब्ज तेजी के साथ चलने लगती है। व्यक्ति का तन–मन ऐसी बेचैनी महसूस करने लगता है कि जैसे उसका दम घुट रहा हो। ऐसी स्थिति अगर किसी व्यक्ति की हो तो उसे दिल का दौरा पड़ना कह सकते हैं।

इन सभी लक्षणों में व्यक्ति को चाहिए कि वह बिस्तर पर लेट जाए और तुरन्त डॉक्टर को दिखाए।

आनंद राज

समय बड़ा मूल्यवान रे

समय का कर ले मोल,
समय बड़ा मूल्यवान रे
किया जिसने सदुपयोग,
बना वही महान् रे!
समय का महत्त्व समझ,
तभी तेरा भविष्य, उज्ज्वल
हर जगह तू नंबर वन,
हर चीज में तू अव्वल!
सफलता–असफलता की,
है, यही पहचान रे
समय का कर तो मोल,
समय बड़ा मूल्यवान रे!

अभिनंदन गोपाल

मेरी बात समझ ले तू

लगे रहते मोबाइल पर,
सेल्फी लेते रहते हो।
वॉट्स–अप पर चैट करते,
घर में बैठे रहते हो।
समय की परवाह नहीं करते,
घर में क्यों तुम रहते हो?
थोड़ा तो तू पढ़ ले पगले,
आगे क्यों नहीं बढ़ते हो?
निकल चार–दीवारी से बाहर,
थोड़ा तो काम कर ले तू।
वॉट्स–अप, फेसबुक के साथ–साथ
मेरी बात समझ ले तू।
थोड़ा समय पर ध्यान दे–दे
वरना तू पछताएगा।
बर्गर–पिज्जा भूलकर
जब नमक–रोटी खाएगा।

युवराज सिंह

कहानी

परवाह किसे है

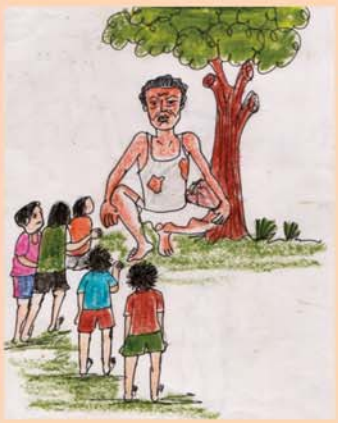

मुनष्य क्या समझता है कि सिर्फ एक वही है जो समय की मार सहता आया है। समय की मार हमने भी सही है। शुरु से ही हम मनुष्य का साथ देते आये हैं। पर जब हमें उनकी जरूरत होती है तो ये हमें ठुकरा देते हैं। खैर अब छोड़िये इस बात को पहले मैं अपना परिचय देता हूँ। मैं आये दिन गलियों में भटकने वाला कुत्ता हूँ। मैंने इतने दिन देखे है, जिससे ये तो कह ही सकता हूँ कि मैं मनुष्य को खुद से बेहतर जानता हूँ। अब आज की ही बात ले लीजिए। एक तो रात भर जाग कर भूँकना पड़ता है। सुबह जब सोने गया तो कुछ लड़के आकर हुड़दंग करने लगे। एक बार तो मन किया कि इन सब को खदेड़ दूँ, पर सिर्फ भूँक कर आँखें बंद कर लीं। फिर भी इन लड़कों का शोर मुझे सुनाई दे रहा था। मैंने एक आँख खोल कर देखा। वे लोग एक बूढ़े को घेरकर खड़े थे। उस बूढ़े ने फटे–पुराने और बेहद गंदे कपड़े पहन रखे थे, और बगल में एक गंदी–सी गठरी रखी थी। लड़के बार–बार उसे पतले डंडे से ठोके जा रहे थे। थोड़ी ही देर में उसे पत्थर उठाकर मारने लगे। ये बच्चे उसे तब तक तंग करते रहे, जब तक कि उनकी माँ आकर उन्हें कान पकड़कर घसीट कर ले गईं। उन्हीं में से शायद कोई भली औरत ने उस बूढ़े की ओर कुछ रोटियाँ फेंक दी। अब वह सिर्फ अकेला था उसने मुझे अपनी ओर ताकता देख उसने एक रोटी मेरी ओर भी फेंक दी। मैंने झटपट उसे मुँह में दबा लिया और दूसरी रोटी की ताक में खड़ा होकर दुम हिलाने लग गया। उस बूढ़े ने एक रोटी के बहाने मुझे अपने पास बुला लिया। हमें क्या है, जहाँ प्यार मिला, उसी तरफ हो लिये। मैं भी दुम हिलाता हुआ उसके पास आ गया। उसने मुझे रोटी का टुकड़ा दिया और पास बैठा लिया। वह धीरे–धीरे कुछ बोल रहा था। जैसे–मुझे अपनी कहानी बता रहा हो, बेचारा बूढ़ा। गरीबी में उसने अपने बेटे को पाल–पोस कर बड़ा किया, पढ़ाया–लिखाया। बेटे को एक अच्छी कंपनी में नौकरी भी हो गई। अच्छा घर ढूँढ़कर शादी भी कर दी। बहू को सास–ससुर फूटी आँख न सुहाए। बूढ़ी सास घुट–घुट कर मर गई। अब बेचारा बूढ़ा बाप को पागल कह कर घर से निकाल दिया। तब से बेचारा इधर–उधर भटक रहा है। शाम तक वहीं बैठा रहा, फिर उठ कर जाने लगा तो मैं, भी उसके पीछे–पीछे जाने लगा। पहले तो उसने पत्थर उठाकर मुझे डराया। जब मैं नहीं माना तो उसने कोशिश छोड़ दी। वह आगे–आगे चलने लगा, और मैं उसके पीछे–पीछे। चलते–चलते पुल तक गया। पुल जो नदी के इस ओर से उस ओर तक था। वह बीच पुल पर जाकर रेलिंग से नीचे ताकने लगा। जब तक मैं उसके पास जाता, वह पुल से नीचे कूद गया। मैं भूँकता रहा कभी पुल पर जाकर तो कभी नीचे आकर। कुछ लोग पुल पर आ–जा रहे थे। किन्तु किसी को कोई परवाह नहीं थी, मैं भूँकता रहा।

घुँघरू आनंद

पछताओगे

बचपन में तो हमने,
खूब किया है मजा ।
अब बुढ़ापे में,
भोग रहा हूँ सजा।
इस बुढ़ापे–जीवन में,
बहुत हीं कठिनाई है।
जिन्दगी कट जाए,
कई मुश्किलें आई हैं।
बेटा–बहू को फिक्र कहाँ,
वे अपनी धुन में रहते हैं।
उन्हें पता ही नहीं, कि
हम कितना कष्ट सहते हैं।
पर एक समय ऐसा आएगा,
बेटे–बहू देंगे खूब ध्यान।
हम उनको देकर आशीष,
करेंगे उनका खूब कल्याण।

विष्णु कुमार

बबलू–बबली के चुटकुले

- **बबलू** : तमु कितना पढ़ी हो बबली ?
- **बबली** : बी. ए.
- **बबलू** : सिर्फ दो ही अक्षर और वह भी उल्टा।
- **बबलू** : डॉक्टर साहब अभी पैसे नहीं है, आप दवाई दे दीजिए। मैं भी कभी आपके काम आ जाऊँगा।
- **डॉक्टर** : क्या काम करते हो?
- **बबलू** : जी, कब्र खोदता हूँ।
- **बबलू** : मुझसे जल्दी कोई स्नान नहीं कर सकता। क्योंकि मैं बदन पर साबुन नहीं लगाता।
- **बबली** : मैं तो तुझसे भी जल्दी स्नान करती हूँ। क्योंकि मैं बदन पर पानी नहीं डालता।
- **बबलू** : बताओ, हममें से सबसे बुद्धिमान कौन है?
- **बबली** : मैं अपनी तारीफ नहीं करना चाहती।
- **बबलू** : अच्छा, तो बताओ हम में से बेवकूफ कौन है?
- **बबली** : मैं तुम्हें दुःखी नहीं करना चाहती।
- **बबलू** : (बबली से) अकेले–अकेले समोसे खा रही हो?
- **बबली** : नहीं–नहीं! चटनी के साथ खा रही हूँ।
- **टीटी** : (बबलू से) टिकट दिखाओ।
- **बबलू** : टिकट दिखाता हूँ।
- **टीटी** : अरे! यह टिकट तो पुरानी है।
- **बबूल** : तो क्या यह आपकी ट्रेन नई है?
- **भिखारी**: यदि हमारी सात लाख की लॉटरी खुल गई तो सबसे पहले मकान खरीदूँगा। फिर अपने और तुम सब के लिए नए–नए कपड़े सिलवाऊँगा। इसके अलावा
- **बबलू** : इसके अलावा एक कार खरीद लेना। हमलोग उसमें बैठकर भीख माँगने चलेंगे। क्योंकि आप पैदल चलते–चलते थक जाते हैं।
- **बबली** : पैसा डबल करने का आसान तरीका क्या है?
- **बबलू** : उसे आईने के सामने रख दो।

नन्हें कलाकार

शालू

काजल

मनीष

रूपेश

प्रीती

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

बॉल बैडमिंटन के विजेता बच्चे

बाल किलकारी अखबार लेखन कार्यशाला

नेशनल चिल्ड्रेन साइंस काँग्रेस प्रतियोगिता के तहत किसान से बातचीत करते किलकारी के बच्चे।

हिन्दी दिवस के अवसर पर गीत प्रस्तुत करते किलकारी के बच्चे।

प्रेरक प्रसंग

जापान के सम्राट यामातो का एक राज्य मंत्री था–ओ–चो–सान। उसका परिवार सौहार्द्रता के लिए बड़ा प्रसिद्ध था। उसके परिवार में लगभग एक हजार सदस्य थे, पर उनके बीच एकता का अटूट संबंध स्थापित था। सभी सदस्य साथ–साथ रहते और साथ–साथ ही खाना खाते थे। फिर उनमें द्वेष–कलह की बात ही क्या?ओ–चो–सान के परिवार की सौहार्द्रता की बात यामातो के कानों तक पहुँची। सत्यता की जाँच करने के लिए एक दिन सम्राट स्वयं उस वृद्ध मंत्री के घर तक आ पहुँचे।

स्वागत–सत्कार और **शिष्टाचार** की **रस्में** समाप्त हो जाने पर उन्होंने पूछा, "महाशय! मैंने आपके परिवार की एकता और **मिलनसारिता** की कई कहानियाँ सुनी हैं। क्या आप बताएँगे कि एक हजार से भी अधिक व्यक्तियों वाले आपके परिवार में यह **सौहार्द्रता, प्रेम और एकता** और **स्नेह–संबंध** किस तरह बना हुआ है?"

ओ–चो–सान वृद्धावस्था के कारण अधिक देर तक बातें नहीं कर सकता था। अतः उसने अपने पौत्र को संकेत से कलम–दावात और कागज लाने के लिए कहा। उन चीजों के आ जाने पर उसने अपने काँपते हाथों से कोई सौ शब्द लिखकर वह कागज सम्राट यामातो की ओर बढ़ा दिया। सम्राट ने उत्सुकतावश कागज पर नजर डाली, तो वे चकित रह गये। कागज में एक ही शब्द सौ बार लिखा गया था–"सहनशीलता, सहनशीलता, सहनशीलता... ।"

सम्राट को चकित और अवाक् देखकर ओ–चो–सान ने अपनी काँपती हुई आवाज में कहा, "महाराज! मेरे परिवार की सौहार्द्रता का रहस्य बस इसी एक शब्द में निहित है।

प्रस्तुति–आकाश

फेसबुक का चक्कर

"बेटा एक ग्लास पानी देना तो बहुत जोरों की प्यास लगी है।" बेटे की तरफ से कोई जवाब नही आया। पिता ने फिर दो–तीन बार आवाज लगायी। बेटा तो फेसबुक चलाने में मस्त और व्यस्त! पिता को बहुत गुस्सा आया, 'अरे यह क्या! जो एक बार में सुन जाता था। वह आज सुन क्यों नहीं रहा?" पिता का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। वह चिल्ला रहे थे, "अरे मूर्ख! कान में रूई डालकर बैठे हो क्या?ठहरो, अभी तुम्हारी खबर लेता हूँ।" बेटे को अब खीझ आने लगती है, और वह अनसुना ही किए रहता है। पिता खटिया से नीचे उतर थोड़ी ही दूर बढ़े थे कि अचानक गिर पड़े! धड़ाम–सी आवाज पाकर उनका बेटा हड़बड़ाकर उठा, और देखा। उसके मुँह से कराह–सी फूट आयी, "ओह पिताजी..... । नहीं..... ।" पिताजी नीचे गिरे पड़े थे।

–प्रवीण कुमार

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले। पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

–बाल सम्पादक मंडल

समझना और समझाना

समय एक मस्त पहलू है,
कोई इसे समझ न पाया है।
कभी इस डगर–कभी उस डगर,
चलता यह अपनी राह पर।
हर चीज से मुक्त है यह
कोई इसे पकड़ न पाया है।
समझा जो इसका महत्त्व,
पाया वो सफलता का रहस्य।
समय किसी के लिए रुकता नहीं,
न यह कभी थकता है।
हर किसी का दिन आता है,
पर वह समझ नहीं पाता है।
समझना है हमें समय की,
उलझी हुई गुत्थी को।
हर किसी के पास यह,
पैगाम हमें पहुँचाना है।
बस समय का महत्त्व हमें,
समझना और समझाना है।

गौरव राज

बुजुर्गों का सम्मान

जीवन की रफ्तार को,
किसने मापा है?
खुशनसीब हैं वे,
जिन्हें मिलता बुढ़ापा है।
यादें जो कुछ खट्टी–मीठी,
पर अब सबकुछ तीखी–तीखी।
बेटे को फुर्सत नहीं काम से,
बहुएँ भी थक जाती आराम से।
पोते–पोतियों का नेक इरादा है,
उन्हें पता नहीं कि घर में कोई दादा है।
बुढ़िया को तो रामजी का आसरा है,
क्या कहूँ कैसा माजरा है?
कह रहा हूँ मैं, जो मैंने भाँपा है,
हैं तो सब उनके ही पास,
पर उन्हें नहीं अहसास।
दूर तो हैं ही नहीं,
पर उनके पास भी नहीं।
करें वे किससे शिकायत,
क्या वे बैठाये पंचायत?
हो बेटे–बहू ही ऐसे,
बेचारों का काम चलेगा कैसे?
प्रभु इन्हें दो सदबुद्धि,
कद्र करें, हो इनको बुद्धि।

सम्राट समीर

इस अंक के प्रतिभागी-
सौरभ, संजू, युवराज गुप्ता, सम्राट, युवराज सिंह, वैष्णवी, रौशनी, प्रवीण, विष्णु, रौशन, गौरव, रोहित विकास करिश्मा, श्वेता, सोनू, मोहित, कृष्णा, आकाश, आनंद, मो. राजा।
बाल सम्पादक– पवन, मनीष, मुनदुन, तुलसी, आकाश,घुघँरू, प्रियंतरा,अभिनंदन, आनंद, सुधाकर रवि।
संपादक– ज्योति परिहार, निदेशक, बिहार बाल भवन, किलकारी पटना।
विशेष सहयोग– राजीव रंजन श्रीवास्तव
संयोजक– सुधीर कुमार
डिजाइन– मो. अमजद
कार्यालय– बिहार बाल भवन सैदपुर , किलकारी, पटना–800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब
बूझो-बूझौवलः
बस कण्डक्टर, बैलगाड़ी
परछाई, स्वेटर की बुनाई,
हलवा

माथापच्ची
नवासी

वेबसाइटः www.kilkaribihar.org
दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई-मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspost.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar